आज

16/7/19

समाचार सार

पर्यावरण-संरक्षण के लिए समाज को जागृत करें छात्र-छात्राएं

पौधरोपण करतीं छात्राएं।

कानपुर। सर पदमपत सिहानिया एजूकेशन सेंटर के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में सुश्री वेदिका सिहानियां ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को पर्यावरण के प्रति उनके सामाजिक उत्तरदायित्व हेतु जागरूक करने की सराहनीय प्रयास किया। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रकृति को सुरक्षित रखने की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहने की सलाह दी और युवा वर्ग को अपने आसपास के समाज को भी इस दिशा में जागृत करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहाकि वृक्षारोपण प्रकृति की सुरक्षा की दिशा में एक प्रयास मात्र है। उन्होंने छात्रो से नवीन पौधों के पोषण व उनकी नियमित देखभाल व संरक्षण की सलाह दी। विद्यालय प्रांगण में लघु वन (मिनी फारेस्ट) के निर्माण के लिए सभी विद्यार्थियों को नव निर्मित पौधे प्रदान किये। उन्होंने विद्यार्थियों को अत्यंत प्रोत्साहित किया और उन्हे उनकी सामाजिक एवं पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का अनुभव कराया।

inext

→16/7/19

PICS: DAINIK JAGRAN INEXT

पदमपत में डेवलप होगा मिनी फॉरेस्ट

kanpur@inext.co.in

KANPUR (15 July): सर पदमपत सिंहानिया एजूकेशन सेंटर में मिनी फॉरेस्ट डेवलप किया जाएगा. मंडे को इसकी पहल करते हुए वेदिका सिंहानिया ने कहा कि ट्री प्लांटेशन के बाद उनकी देखभाल करना भी हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है. स्कूल में मिनी फॉरेस्ट बनेगा तो उससे पर्यावरण को संरक्षण मिलेगा.

पौधा लगा देखभाल भी करें

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से पूरी दुनिया का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है. स्टूडेंट्स को भी सोसाइटी के सोशल कॉज में अपनी अहम भागीदारी निभानी चाहिए. सिर्फ ट्री प्लांटेशन करने तक ही सीमित न रहें बल्कि जो पौधे लगाएं उनकी देखभाल करते रहें जिससे वे अच्छी तरह से डेवलप हो जाएं. हमें ज्यादा से ज्यादा ट्री प्लांटेशन करना होगा. प्रिंसिपल भावना गुप्ता ने वेदिका सिंहानिया का वेलकम किया. प्रिंसिपल ने भी स्टूडेंट्स को एनवॉयरमेंट के प्रति अवेयर रहने की सलाह दी.

● कैम्पस में पौधा लगाते स्टूडेंट्स.

स्कूल कैंपस में ज्यादा ग्रीनरी डेवलप करने की कवायद शुरू

हिन्दुस्तान

→16/7/19

सर पद्मपत सिंहानिया में बनेगा मिनी फॉरेस्ट

कानपुर। सर पद्मपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर में सोमवार को वेदिका सिंहानिया ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को पर्यावरण के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए जागरूक करने का प्रयास किया।

उन्होंने कहा कि पर्यावरण के लिए स्वयं जागरूक हों और समाज को जागरूक करें। विद्यालय-प्रांगण में 'लघु वन' के निर्माण के लिए उन्होंने सभी विद्यार्थियों को नव निर्मित पौधे प्रदान किए तथा उन्हें संरक्षित करने को कहा। कार्यवाहक प्रधानाचार्या भावना गुप्ता ने धन्यवाद दिया।

सर पदमपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर में बीजरोपण करतीं छात्राएं। ● हिन्दुस्तान

अमर उजाला

→16/7/19

पर्यावरण संरक्षण को बांटे पौधे

कानपुर। सर पदमपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर में पर्यावरण संरक्षण के प्रति छात्र-छात्राओं को जागरूक किया गया। प्रबंधतंत्र की वेदिका सिंहानिया ने स्कूल परिसर में लघु वन बनाने को पौधे बांटे।

the pioneer
WEDNESDAY | JULY 17, 2019

Vedika apprises children about caring for mother earth

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

Environmental activist Vedika Singhania, while interacting with the rural children on Tuesday to apprise them about caring for mother earth said there was a need to plant a sapling and said for this the seed ball technique was catching fast with the green volunteers across the country. She said seed ball was a ancient concept which was also termed as clay dumplings. She said at one time seed balls were often used as a handy weapon in gardening on land that the gardeners did not have the legal rights to utilise, such as an abandoned site, private property. He said seed balls comprised a mixture of fertile red soil, cow dung, cow urine and other bio compost and the semi-solid mix was prepared by adding water proportionate to the quantity of the mixture, after which a particular plant seed was inserted in it. She said these semisoft seed balls were allowed to dry in the sun and stored for later use.

She said this technique was cost-effective while it worked out for a few thousands to nurture and maintain a plant sapling and that included watering and protection.

Training children to make seed balls she informed that seeds had to be prepared through the 'scarification process' before they were made into seed balls and the process involved weakening, opening, or otherwise altering the coat of a seed to encourage germination.

She told the children that the seeds had to be soaked in water boiled and left until the water cooled to room temperature and then they were ready to be made into seed balls. She said the seed ball technique ensured that saplings survived for at least two months without water and added that if these saplings can stay alive till the beginning of the monsoon, then their survival rate will be more. She said with knowledge, skill, and patience, seedballs can be as effective a way of establishing plants as plowseeding or drilling, and they can be made by anyone anywhere that had access to clay, soil, and seed.

Vedika added that seedballs can also be used to 'over seed' existing ecosystems, without damaging the soil structure or to seed productive plants into forested areas and steep hillsides where tillage was not possible. She added that seedballs can also be used in combination with animals. She explained how to make seedballs and said five parts dry powered clay, three parts fine compost, one part seed mix which was rolled by hand. She enlightened the rural children about the little revolution of Seed Balls, something that can change the face of the earth, something that contained the early stages of a field of wild flowers, edible crops or a herb garden. She involved the children in making seed balls, which was a combination of compost, clay and seeds. Children made seed balls of Neem, Jamun, Laburnum, Gum berry etc. She apprised these naive environmentalists to use their new knowledge and skills to transform their wastelands into green and serene lands.

Noted environmentalist Vedika Singhania interacting with rural children to teach them to prepare seed balls on Tuesday Pioneer